समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Monday, 31 August 2026

# लोकप्रतिनिधि की सादगी बनी मिसाल : लोणावला की नवनिर्वाचित नगरसेविका भाग्यश्री जगताप चुनाव जीतने के बाद भी फल विक्रय मे संक्रिय

Sanket Morankar Published on 27 Dec 2025

नगरपंचायत और नगरपालिका चुनावों के नतीजे घोषित होते ही कई स्थानों पर जश्न, रैलियां और विजय उत्सव देखने को मिले, लेकिन लोणावला से एक बिल्कुल अलग और समाज को सोचने पर मजबूर कर देने वाली कहानी सामने आई है। **लोणावला नगरपरिषद की नवनिर्वाचित नगरसेविका भाग्यश्री जगताप** ने चुनाव में जीत दर्ज करने के महज 24 घंटे के भीतर ही दोबारा अपनी हाथगाड़ी पर खड़े होकर फल बेचना शुरू कर दिया। उनके इस कदम ने पूरे मावल–लोणावला क्षेत्र में चर्चा का विषय बना दिया है।

अक्सर देखा जाता है कि राजनीतिक सफलता मिलने के बाद लोगों की जीवनशैली में बड़ा बदलाव आ जाता है, लेकिन भाग्यश्री जगताप ने यह साबित कर दिया कि **सत्ता से बड़ा श्रम होता है**, और लोकप्रतिनिधि बनना जमीन से नाता तोड़ना नहीं, बल्कि उसे और मजबूत करना है।

भाग्यश्री जगताप पिछले करीब **20 वर्षों से फल विक्रय का व्यवसाय** कर अपने परिवार का पालन-पोषण कर रही हैं। वे लोणावला के बैटरी हिल क्षेत्र, खंडाला–बोरघाट आदिवासी पठार इलाके की निवासी हैं। आर्थिक कठिनाइयों, मेहनत भरे जीवन और समाज की वास्तविक परिस्थितियों को उन्होंने बहुत करीब से देखा है। यही वजह है कि आम नागरिकों की समस्याएं, परेशानियां और जरूरतें वे अन्य लोगों की तुलना में कहीं बेहतर समझ पाती हैं।

एक खास बात यह रही कि चुनाव प्रचार की व्यस्तता के बावजूद भाग्यश्री जगताप ने अपने फल विक्रय के व्यवसाय को कभी बंद नहीं किया।
सुबह और दोपहर नियमित रूप से अमरूद बेचकर वे घर का खर्च चलाती थीं, जबकि शेष समय चुनाव प्रचार की जिम्मेदारी निभाती थीं। दिनभर कड़ी मेहनत करने के बाद शाम के समय वे मतदाताओं से प्रत्यक्ष मुलाकात कर प्रचार में सक्रिय रूप से शामिल होती थीं। आजीविका और राजनीतिक जिम्मेदारियों के बीच उन्होंने बेहतरीन संतुलन बनाए रखा।

नगरसेविका चुने जाने के बाद भी भाग्यश्री जगताप ने बिना किसी दिखावे के दोबारा अपनी हाथगाड़ी पर अमरूद बेचना शुरू किया। उन्होंने जीत का जश्न दिखावे में नहीं, बल्कि मेहनत के काम में संतोष ढूंढकर मनाया।
उनके शब्दों में,

> **"मतदाताओं ने मुझ पर जो विश्वास जताया है, उस पर खरा उतरना और अपने मूल व्यवसाय से नाता न तोड़ना—यही मेरी भूमिका है।"**

भाग्यश्री जगताप राजनीति को केवल सत्ता का साधन नहीं मानतीं। उनके लिए राजनीति का अर्थ है जनता से जुड़ी हुई सेवा। वे मानती हैं कि जिस समाज से हम आते हैं, उसी समाज के साथ जुड़े रहना ही सच्चा जनप्रतिनिधित्व है। यही कारण है कि वे आज भी उसी स्थान पर फल बेचती नजर आती हैं, जहां पहले बेचा करती थीं, और वहीं लोगों की समस्याएं भी सुनती हैं।

लोणावला नगरपरिषद चुनाव में विधायक सुनील शेलके ने उन्हें उम्मीदवार बनाया था। प्रचार के दौरान आदिवासी और सामान्य नागरिकों से उन्हें भरपूर समर्थन मिला। संघर्ष, कड़ी मेहनत, ईमानदारी और जिद के बल पर हासिल की गई यह जीत आज कई नए कार्यकर्ताओं और महिलाओं के लिए प्रेरणादायक बन रही है।

भाग्यश्री जगताप की यह कहानी विशेष रूप से महिलाओं के लिए प्रेरणा देने वाली है। घर, व्यवसाय और सामाजिक जिम्मेदारियों को एक साथ निभाते हुए उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि **महिला नेतृत्व जमीन से खड़ा होकर भी प्रभावशाली हो सकता है**।

लोणावला की नवनिर्वाचित नगरसेविका **भाग्यश्री जगताप** आज केवल एक राजनीतिक प्रतिनिधि नहीं रहीं, बल्कि वे सादगी, श्रमसंस्कृति और लोकतांत्रिक मूल्यों का जीवंत उदाहरण बन चुकी हैं। फल विक्रय की हाथगाड़ी से लेकर नगरसेविका के पद तक का उनका सफर संघर्ष, मेहनत और आत्मसम्मान की प्रेरणादायक गाथा है। आज के दौर की राजनीति में ऐसा सरल और जमीन से जुड़ा नेतृत्व दुर्लभ है, और इसी वजह से भाग्यश्री जगताप की कहानी समाज को एक नई दिशा देने वाली साबित हो रही है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.